दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

'पूर्वोत्तर भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली'

(TRADITIONAL KNOWLEDGE SYSTEM OF NORTH EAST BHARAT)

HERITAGE FOUNDATION

आयोजक

हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, अगरतला, त्रिपुरा-22

सहयोग

हेरिटेज फाउंडेशन, गुवाहाटी, असम (Heritage Foundation, Guwahati, Assam)

तिथि: 20-21 मार्च, 2025

स्थान: कांफ्रेंस हॉल, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर, अगरतला

भारत में ज्ञान की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। हमारी संस्कृति सदैव समावेशी, करुणामूलक, सामासिक रही है, यह सामासिकता ही राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान कराती है और पूरे देश को राष्ट्रीय एकता और अखंडता के सूत्र में बांधती है। भारतीय ज्ञान का 50% यहाँ की मौखिक परंपरा में व्याप्त है। जिसे राष्ट्रहित में संकलित और अर्जित कर राष्ट्र के विकास कार्य में उपयोग किया जा सकता है। इस क्रम में पूर्वोत्तर भारत को विशेषकर देखा जा सकता है। हजारों सालों से पूर्वोत्तर भारत के स्थानीय समुदायों में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली चली आ रही है। पूर्वोत्तर की संस्कृति सदियों पुरानी परंपराओं, विविध भाषाओं, समृद्ध लोककथाओं और लुभावने भौगोलिक दृश्यों से बुना गया एक जीवंत ताना-बाना है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो अपने भीतर प्राचीन रीति-रिवाजों और आधुनिक प्रगति का एक असाधारण मिश्रण समेटे हुए है, जहाँ हर समुदाय, हर राज्य की अपनी एक अनूठी पहचान है। 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में जाने जाने वाले ये आठों राज्य देवी लक्ष्मी में सन्निहित समृद्धि, ऐश्वर्य, पवित्रता, धन, ज्ञान, कर्तव्य, कृषि और पशुपालन जैसे समृद्धि के आठ रूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। साथ ही, अपनी संस्कृति, अर्थव्यवस्था, इतिहास, रीति-रिवाजों, दृष्टिकोण और जीवनशैली, जीवंत त्योहारों, चित्रकला, मूर्ति कला, हस्तशिल्प, अध्यात्म, कृषि-पद्धतियाँ, मछली पालन, हर्बल तथा आयुर्वेदिक दवाई व चिकित्सा-पद्धतियों तक, कुल मिलाकर पूर्वोत्तर भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली भारतीय लोगों की ऐसी बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है। प्रस्तावित संगोष्ठी का उद्देश्य पूर्वोत्तर में विभिन्न रूपों में मौजूद इसी लिखित या मौखिक ज्ञान परंपरा को समझना और वर्तमान संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर विचार करना है। हिंदी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर द्वारा उक्त संगोष्ठी का आयोजन पूर्वोत्तर भारत में शोध और अकादमिक गतिविधियों को समर्पित संगठन हेरिटेज फाउंडेशन, गुवाहाटी के सहयोग से किया जाएगा।

उद्देश्य-

1. विद्यार्थियों के बीच परंपरा का अर्थ स्पष्ट करना।
2. ज्ञान परंपरा की समृद्ध विरासत खोजना और प्रामाणिक सामग्री को एकत्रित करना।
3. पूर्वोत्तर के विभिन्न जातीय समूहों की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली के दर्शन को समझना।
4. आधुनिक जीवन में पारंपरिक प्रणाली की प्रासंगिकता का विश्लेषण।
5. युवाओं के चरित्र निर्माण के लिए प्रभावी पारंपरिक ज्ञान की अवधारणा को बढ़ावा देना।
6. शोध निष्कर्षों के आदान-प्रदान को प्रोत्साहन देना और समाज में सर्वोत्तम पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को बढ़ावा देना।
7. संगोष्ठी के उपरांत चयनित शोध पत्रों को प्रकाशित करना।

उप-विषय-

- पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का मूलभूत विचार।
- पूर्वोत्तर की किसी भी जनजाति की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली।
- किसी समुदाय के दैनिक जीवन में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली का उपयोग।
- आधुनिक समाज में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली की संभावनाएँ।
- आधुनिक चिकित्सा के युग में पारंपरिक ज्ञान प्रणाली की चुनौतियाँ।
- किसी भी समुदाय की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली पर शोध कार्य की संभावनाएँ।

यह संगोष्ठी पूर्वोत्तर की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली को समझने के लिए नए दृष्टिकोण प्रदान करेगी। संगोष्ठी के निष्कर्ष शोधकर्ताओं, नीति-निर्माताओं और प्रशासकों के लिए लाभकारी होंगे, जिन्हें राज्य और देश के शासन तंत्र में शामिल किया जा सकेगा। संगोष्ठी के निष्कर्षों को दस्तावेज़ीकृत किया जाएगा, जो भविष्य में संदर्भ हेतु उपयोगी होंगे।

शोध पत्र प्रस्तुत करने के दिशा-निर्देश-

शोध सारांश (न्यूनतम 300 शब्द) और पूर्ण शोध पत्र (न्यूनतम 2500-4000 शब्द) को हिन्दी (मंगल/यूनिकोड फोंट, अंग्रेजी, बंगला अथवा कॉकबरक में टंकित कर PDF और Word फाइल के रूप में भेजें। संदर्भ शैली (APA 7th संस्करण) का पालन करें।

ई-मेल -

- milanrani08@tripurauniv.ac.in
- malaydeb@tripurauniv.ac.in

- महत्वपूर्ण शोध पत्र में लेखक का नाम, संबद्धता और संपर्क विवरण स्पष्ट रूप से हो। चयनित आलेखों को हेरीटेज फाउंडेशन, गुवाहाटी द्वारा प्रकाशित पत्रिका में स्थान दिया जाएगा।
- आलेख प्रस्तुत करने वालों के लिए पंजीकरण शुल्क 500 रुपए रहेगा।

महत्वपूर्ण तिथियां-

आलेख सारांश भेजने की अंतिम तिथि: 5 मार्च, 2025
पूर्ण आलेख भेजने की अंतिम तिथि: 10 मार्च, 2025
संगोष्ठी सूचीकरण: 15 मार्च, 2025
संगोष्ठी आयोजन तिथि: 20th -21st मार्च, 2025

आयोजन समिति-

- संरक्षक: प्रो. गंगा प्रसाद प्रसाईं, माननीय कुलपति, त्रिपुरा विश्वविद्यालय एवं श्री जलेश्वर ब्रह्मा, अध्यक्ष, हेरीटेज फाउंडेशन, गुवाहाटी, असम
- संगोष्ठी संयोजक- प्रो. मिलन रानी जमातिया, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
- सह-संयोजक-

  डॉ. मनोज कुमार मौर्य, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
  डॉ. मलय देब, असिस्टेंट प्रोफेसर, बंगला विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
  श्रीमती खुमतिया देबबर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, कॉकबरक विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय
  डॉ. अपर्णा दास, असिस्टेंट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

GFX: NAKHYATRA GRAPHICS 9101379410